# बाइबल टीचर

वर्ष 20 | नवम्बर 2023 | अंक 12

# सम्पादकीय

## कलीसिया में अधिकार

जब किसी के पास अधिकार होता है तो वह सब बातों पर अपना कन्ट्रोल रखता है। यानि यह एक प्रकार की पावर होती है जिससे वह सब बातों पर नियंत्रण रखता है। जब कोई गलत काम करता है तो जो अधिकारी होता है वह उसे दण्ड देता है। यदि हम किसी दफ्तर या संगठन में होते हैं तब हमें वहाँ के अधिकारी की बात माननी पड़ती है। यदि हम चाहते हैं कि सब कुछ ठीक चले तो हमें अधिकारी की बात माननी पड़ेगी। धार्मिक रूप से हम देखते हैं कि चर्च का अधिकार यीशु के पास है क्योंकि वह देह यानि कलीसिया का सिर है। (कुलस्सियों 1:18) प्रेरित पौलुस ने इफिसियों की कलीसिया से कहा था, ''और सब कुछ उसके पाँव तले कर दिया, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणी ठहरा कर कलीसिया को दे दिया। क्योंकि यह उसकी देह है और उसी की परिपूर्णता है जो सबमें सब कुछ पूर्ण करता है। (इफि. 1:22-23) कलीसिया को यीशु ने बनाया था और इसीलिये कलीसिया का सारा अधिकार उसके हाथ में है और उसके नियम के अनुसार सारी बातें होना आवश्यक है।

यीशु ने कहा था कि, ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। (मत्ती 28:18) कलीसिया मसीह की है, और यह उसका राज्य है, तथा इस राज्य का राजा वह स्वयं है। (मत्ती 16:18-19)। बाइबल हमें बताती हैं कि अपनी कलीसिया को उसने अपने लोहू से मोल लिया है। (प्रेरितों 20:28) पतरस ने प्रचार करते हुए बोला कि यीशु को परमेश्वर ने दाऊद के राज्य पर बिठाया (प्रेरितों 2:29-30)। यीशु मृतकों में से उठकर दाऊद के सिंहासन पर राज्य कर रहा है।

जैसा कि हम जानते हैं कि कलीसिया मसीह की देह है। (इफि. 5:30)। जैसे एक देह में अलग-अलग अंग होते हैं उसी प्रकार से कलीसिया में अलग-अलग

लोगों के कार्य होते हैं। कलीसिया में जबकि यीशु एक अधिकार या हैड है, इसलिये यह बात गलत है कि कलीसिया का हैड कोई पोप, पास्टर या बिशप है। कुछ लोगों का विचार है कि कोई भी पास्टर पादरी या प्रचारक कलीसिया का सिर या मुखिया हो सकता है। परमेश्वर ने किसी को यह पावर नहीं दी कि वह यीशु का अधिकार अपने हाथों में ले ले।

बाइबल हमारा फाईनल अधिकार है और इसलिये जैसा बाइबल कहती है हमें वैसा ही करना आवश्यक है।

यीशु के पास सारा अधिकार है। उसकी अज्ञायें हमें उसके नये नियम में मिलती है। (इब्रानियों 1:1, 2) आज लोगों ने यीशु की अज्ञाओं के स्थान पर अपने अधिकार से यह प्रचार शुरू कर दिया है कि उद्धार केवल विश्वास से हो सकता है तथा बपतिस्मे की कोई आवश्यकता नहीं है। उसने अधिकार से कहा है कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा (मरकुस 16:16) यह बात यीशु ने इसलिये भी कही थी क्योंकि वह कलीसिया का मुखिया है।

कलीसिया के कार्य को किस प्रकार से चलाना है, यह यीशु ने अपने वचन में बताया है और कोई भी व्यक्ति यीशु के अधिकार को नहीं ले सकता है। मसीह की कलीसिया में ऐलडर और प्रचारक तथा डीकन होते हैं। और सब यीशु के आधीन कार्य करते हैं जो चीफ ऐलडर है। आज के युग में कई लोग ऐसा सोचते हैं कि वे कलीसिया के मुखिया है परन्तु यह गलत है। आपको यह जानना आवश्यक है कि सारा अधिकार यीशु का है। आप उस अधिकार को अपने हाथ में न लें जो यीशु का है। उसके अधिकार को अपने हाथ में न लें।

कलीसिया के सारे सदस्यों को यह समझना चाहिए कि जो भी हम करते हैं, यानि हमारी अराधना उद्धार तथा कलीसिया के कार्य वे सब उसकी इच्छानुसार होने चाहिए। कोई भी मनुष्य कलीसिया को अपनी मर्जी से नहीं चला सकता। मनुष्य के अन्दर कई बार ऐसी भावना आ जाती है कि मैं यहाँ कलीसिया में बड़ा हूँ और सब को मेरी बात माननी चाहिए तो यह गलत है। आप चाहे, कुछ भी हो, बहुत पढ़े-लिखे हैं या पैसे वाले हैं तब भी आप यीशु की कलीसिया या चर्च के हैड नहीं है।

बाइबल में हम पढ़ते हैं कि सबको पुत्र यानि यीशु का आदर करना चाहिए जैसे वे पर, परमेश्वर का आदर करते हैं। (यूहन्ना 5:23)। जो पिता का आदर नहीं करता वह पुत्र का भी आदर नहीं करता। यदि हम यीशु का आदर करते हैं तो उसके अधिकार को भी मानेंगे। यदि आप यीशु का आदर करेंगे तो उसके द्वारा दिये गये नये नियम का भी आदर करेंगे और उससे दी गई आज्ञाओं को भी मानेंगे। याद रखिये पृथ्वी पर कलीसिया का सिर या मुखिया केवल और केवल यीशु है।

# सुसमाचार अच्छा समाचार है!

## सनी डेविड

बाइबल का अर्थ है किताब, परन्तु इस किताब को पवित्र हम इसलिये कहते हैं क्योंकि इसके भीतर परमेश्वर का वचन लिखा हुआ है। यह पुस्तक हमें जगत की सृष्टि से लेकर जगत के अंत तक की बातों के विषय में बताती है। परन्तु सबसे अधिक बाइबल हमें परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह के बारे में बतलाती है। यीशु का जन्म आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हुआ था। उसके जन्म से पूर्व परमेश्वर ने अनेकों भविष्यद्वक्ताओं को उसके विषय में लिखने को प्रेरित किया था। उनके द्वारा परमेश्वर ने अपने पुत्र के जन्म से पूर्व यह प्रगट किया था कि उसका जन्म कहां और कैसे होगा। जन्म से ही यीशु का जीवन बड़ा अद्‌भुत था। जब वह बड़ा हुआ तो उसने लोगों के सामने ऐसे-ऐसे अचम्भे के काम किए कि लोग देखकर कहने लगे, कि, ''हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।'' (यूहन्ना 3:2) इसी प्रकार उसका उपदेश सुनकर लोग कहते थे, कि किसी भी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं। (यूहन्ना 7:46)। और इस बात का कारण यह था कि यद्यपि यीशु एक मनुष्य तो था ही, परन्तु वह परमेश्वर भी था। क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र था। बाइबल हमें बताती है कि यीशु को परमेश्वर ने एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर इसलिए भेजा था ताकि उसके द्वारा हम सब मनुष्यों का परमेश्वर के साथ मेल हो जाए। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य, बाइबल कहती है, अपने पाप के कारण परमेश्वर से दूर है।

किन्तु बाइबल में यीशु की मृत्यु को उसके जीवन से भी अधिक महत्व दिया गया है। स्वयं यीशु ने कई बार लोगों को अपनी मृत्यु के बारे में बताया था। उसने उन्हें बताया था कि कुछ ही समय में लोग उसे पकड़ेंगे और उस पर झूठे दोष लगाए जाएंगे, और फिर उसे एक क्रूस के ऊपर लटकाकर मारा जाएगा। एक जगह उसने कहा, कि, ''जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए।'' (यूहन्ना 3:14)। और एक अन्य स्थान पर यीशु ने यू कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।'' (यूहन्ना 12:24)। परन्तु फिर उसने कहा, कि मैं अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन फिर से जी उठूंगा। एक जगह उसने अपनी देह को एक मन्दिर के समान बताकर यहूदियों से कहा,''कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।'' इसमें कोई संदेह नहीं कि किसी भी मनुष्य ने कभी इस प्रकार की बातें नहीं की। किन्तु यीशु अधिकार और निश्चय के साथ बात करता था। वह जानता था कि वह कैसे और किस लिए मरेगा, और उसे निश्चय था कि अपनी मौत के बाद वह फिर जी उठेगा। क्या कोई मनुष्य ऐसी बातें कर सकता है? और मान लीजिए, यदि यीशु की बातें गलत निकलतीं, तो आज उस पर कौन विश्वास लाता?

यीशु की मृत्यु आवश्यक थी। क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती (इब्रानियों 9:22), और बाइबल कहती है कि यह अनहोना है कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे। (इब्रानियों 10:4)। यीशु क्योंकि धर्मी और पवित्र था इसलिए परमेश्वर के सम्मुख उसका बलिदान एक सिद्ध बलिदान था और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसका बलिदान परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था। यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने जगत को धर्मी ठहराया। वह परमेश्वर की इच्छा से जगत के पापों का प्रायश्चित बनकर क्रूस पर मरा। परन्तु जितनी अधिक यीशु की मृत्यु आवश्यक थी उसमें भी अधिक उसका पुनरूत्थान आवश्यक था। क्योंकि यदि यीशु क्रूस पर केवल मरा ही होता, तो आज हम शायद उसकी बातों पर संदेह कर सकते थे। क्योंकि उसकी बातों पर विश्वास लाने का हमारे पास कोई पक्का सबूत न होता। इसमें कोई शक नहीं कि उसने एक अच्छा जीवन व्यतीत किया था, और उसने बड़े-बड़े अचम्भे के काम किए थे और अच्छे-अच्छे उपदेश दिए थे। परन्तु यदि वह सभी अन्य मनुष्यों की तरह केवल मर ही गया होता तो वह एक मात्र इंसान से बढ़कर और कुछ नहीं ठहराया जाता। उसे यह सिद्ध करने के लिए कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है फिर से जी उठना आवश्यक था। मान लीजिए, यदि वह यह कहता कि मैं जगत के पापों के लिए मर जाऊंगा और फिर जगत के अन्त में दोबारा प्रगट होऊंगा। तो आज हमारे पास कौन सा सबूत होता जिस से हम यह जानते कि वह परमेश्वर का पुत्र है? इसलिए पवित्र बाइबल कहती है, कि वह मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। (रोमियों 1:4)।

सो यीशु न केवल हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस के ऊपरा मरा, परन्तु पवित्र बाइबल में लिखा है कि वह अपने कहे अनुसार तीसरे दिन फिर से जी भी उठा। क्योंकि तीसरे दिन उसकी लोथ उस कब्र के भीतर नहीं थी जिसके भीतर उसे मरने के बाद गाड़ा गया था। परन्तु उन्होंने उसे जीवित देखा और वह उनके साथ चालीस दिन तक रहा। इस सम्बन्ध में बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं: ''पीछे वह उन ग्यारहों को भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्होंने उनकी प्रतीति न की थी। और उसने उनसे कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारे सृष्टि के लोगों को सूसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' (मरकुस 16:14-16)। इसके बाद बाइबल हमें बताती है, कि यीशु स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया और उसके चेलों ने उसकी आज्ञानुसार सब जगह जाकर उसके सुसमाचार का प्रचार करना आरम्भ कर दिया।

सुसमाचार का अर्थ है एक अच्छा समाचार यानि यीशु ने अपने चेलों को एक अच्छा समाचार देकर जगत में भेजा था, और उसने उनसे कहा था कि इस अच्छे संदेश को तुम जगत में प्रत्येक मनुष्य को जाकर सुनाओ। यीशु के सुसमाचार में सबसे पहिली अच्छी बात हम यह देखते हैं कि उसमें हमें प्रेम का समाचार मिलता है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि उस पर विश्वास लाकर जगत उद्धार पाए। (यूहन्ना 3:16) और फिर यूँ लिखा है, कि परमेश्वर

ने अपने प्रेम को जगत पर इस प्रकार प्रगट किया कि जब हम सब पापी ही थे तो उसकी इच्छा से उसका पुत्र मसीह यीशु हम सबके लिए क्रूस पर मर गया। (रोमियों 5:8)। सो दूसरे शब्दों में हम यूं कह सकते हैं, कि यीशु ने अपने चेलों को यह अच्छा समाचार सुनाने को जगत में भेजा कि परमेश्वर जगत से प्रेम करता है और अपने प्रेम को उसने क्रूस के ऊपर प्रकट किया है। जहां उसने अपने एकलौते पुत्र को जगत के पापों के लिए प्रायश्चित बनाकर बलिदान कर दिया। इस बात पर जब हम व्यक्तिगत रूप से विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि प्रभु का यह समाचार वास्तव में कितना अच्छा है। परमेश्वर जो सर्वशक्तिमान, सारे जगत का मालिक, पवित्र और महान है, उसने मुझ से ऐसा प्रेम रखा कि मुझें पाप और नरक से मुक्ति दिलाने के लिए उसने अपना एकलौता पुत्र बलिदान कर दिया! कभी-कभी मूझे कुछ ऐसे लोगों से मिलने का अवसर मिलता है जिनके पास कोई ऐसी वस्तु होती है जो उन्हें किसी खास मनुष्य के द्वारा मिली है। वे उस वस्तु को बड़े ही सभ्भाल कर रखते हैं, उसके कारण वे अपने आप को बड़ा ही सौभाग्यशाली समझते हैं, और उसे अन्य लोगों को दिखाकर बड़ा ही गौरव महसूस करते हैं। भले ही वह वस्तु छोटी सी ही क्यों न हो, चाहे वह एक पत्र ही क्यों न हो, परन्तु उसे वह अपने प्राणों की तरह सभ्भाल कर रखते हैं। और ऐसा वे इसलिये करते है क्योंकि वह वस्तु उन्हें एक बड़े ही खास व्यक्ति से मिली है, शायद किसी प्रसिद्ध संस्था से, या कदाचित किसी देश के राष्ट्रपति या प्रधान मंत्री से परन्तु यीशु का सुसमाचार हमें यह अच्छा समाचार देता है कि परमेश्वर, जो सबसे महान और सबका स्वामी है, हम से ऐसा प्रेम रखता है कि उसने हम सबके पापों का प्रायश्चित करने के लिए अपने एकलौते पुत्र को हमारे लिए दे दिया! इस बात से हमें प्रसन्न होना चाहिए। इसमें हमें गौरव का अनुभव करना चाहिए। हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि उसे हमारी चिन्ता है। वह हम से प्रेम रखता है। और जब हम पापी ही थे और नरक के योग्य थे, तो उसने हमें बचाने के लिए अपने एकलौते पुत्र को हमारे बदले में बलिदान कर दिया। और फिर दूसरी अच्छी बात यीशु के सुसमाचार में हमें यह मिलती है हमे में से कोई भी यीशु में विश्वास लाकर और बपतिस्मा लेकर अपने पापों से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि यीशु ने कहा है कि सुसमाचार को सुनकर जो विश्वास करेंगा और बपतिस्मा लेगा उसका उद्धार होगा। जगत में सबसे बड़ा और सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है, कि मैं अपने पापों से उद्धार पाने के लिए क्या करूं? और यीशु के सुसमाचार में इस महत्वपूर्ण प्रश्न का हमें यह सरल उत्तर मिलता है कि कोई भी मनुष्य उसमें विश्वास लाकर और बपतिस्मा लेकर उद्धार पा सकता है। क्योंकि हमारे उद्धार का काम तो वह क्रूस के ऊपर पूरा कर चूका है। हमें केवल उसमें विश्वास लाना है। और उसकी आज्ञा का पालन करना है।

सो मित्रो कितना अच्छा है यीशु का यह सुसमाचार। वास्तव में यह सुसमाचार है। और सबसे बड़ी बात यह है कि यह सुसमाचार हम में से हर एक मनुष्य के लिए है।

प्रभु अपने वचन को समझने तथा उस पर चलने के लिए आप सबको आशीष दे।

---

# कलीसिया के सदस्य कैसे बनें?

## जे. सी. चोट

अब तक के अध्ययन में हम ने कलीसिया के महत्व को देखा। इस तथ्य का समर्थन करते हुए पवित्रशास्त्र शिक्षा देता है कि मसीह कलीसिया के लिए मरा (इफिसियों 5:25), उसने कलीसिया को अपने लोहू से मोल लिया है (प्रेरितों 20:28), और वह इसका उद्धारकर्ता है (इफिसियों 5:23)। अब प्रश्न यह है, क्या मसीह किसी ऐसी वस्तु के लिये मरा जिसका कोई महत्व न हो? क्या उसने अपना लोहू एक ऐसी कलीसिया के लिये बहाया जो कि मूल्य-रहित व व्यर्थ है? यदि कोई व्यक्ति इसके बाहर भी उद्धार पा सकता है तब वह इसका उद्धारकर्ता क्यों है? नि:संदेह, हर एक प्रश्न का उत्तर आप नहीं में देंगे, और यह उचित भी है। तब, ऐसा क्यों कहा जाता है कि कलीसिया का कोई विशेष महत्व नहीं है, और इसके सदस्य हुए बिना भी उद्धार मिल सकता है। इसका कारण यह है कि अधिकांश लोग कलीसिया के विषय में सत्य को नहीं जानते क्योंकि उन्होंने सही शिक्षा नहीं पाई है।

हां, बाइबल यह शिक्षा नहीं देती कि कलीसिया उद्धारकर्ता है, परन्तु वह यह शिक्षा देती है कि उद्धार पाने के लिये कलीसिया में होना आवश्यक है। जिस प्रकार से नूह का जहाज बचाने वाला नहीं था, तौ भी नूह और उसके परिवार को जलप्रलय से बचने के लिये उस जहाज के भीतर होना अतिआवश्यक था, ऐसा ही कलीसिया के साथ भी है। इतना ही नहीं, परन्तु जब कोई उद्धार पाता है तो प्रभु उसे अपनी कलीसिया में मिला लेता है। पिन्तेकुस्त के दिन तथा उसके बाद के दिनों में जब लोगों ने सुसमाचार सुना और उसे माना, तब उनका उद्धार हुआ, जैसा कि लिखा है, "और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें (कलीसिया में) मिला देता था" (प्रेरितों 2:47)। सो यदि कोई उद्धार प्राप्त करता है तो वह प्रभु की कलीसिया का सदस्य बन जाता है। यदि वह सदस्य नहीं है, तब उसका उद्धार नहीं हुआ है। यह समझना कितना सरल है। दूसरे शब्दों में ऐसा कोई भी उपाय नहीं है जिसके द्वारा कलीसिया के बाहर उद्धार मिल सके। मनुष्यों के पंथ अथवा सम्प्रदायों के सदस्य बने बिना हमें उद्धार मिल सकता है, परन्तु मसीह की कलीसिया के सदस्य बने बिना कोई भी व्यक्ति उद्धार प्राप्त नहीं कर सकता।

अपने अध्ययन को जारी रखते हुए, प्रभु की कलीसिया में अपने आप से कोई भी व्यक्ति सम्मिलित नहीं हो सकता। इसके विपरीत, उद्धार पाए हुओं को प्रभु कलीसिया में मिलाता है। जबकि वह केवल उद्धार पाए हुओं को ही कलीसिया में मिलाता है इसलिये कलीसिया उद्धार पाए हुए जनों से मिलकर बनी हुई है। मनुष्य के मन, उद्देश्य इत्यादि को प्रभु खूब जानता है, और वह देखता है कि कौन यथार्थ में उसकी आज्ञाओं को मान रहा है। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में उसकी आज्ञा मानता है तब परमेश्वर उसे कलीसिया में मिलाता है। यदि ऐसा नहीं है, तब वह परमेश्वर द्वारा नहीं मिलाया जाता, यद्यपि सदस्य उसे स्वीकार कर लें क्योंकि बाहरी रूप से उसने आज्ञाओं का पालन किया है, और

जबकि हम मनों को नहीं जांच सकते। यदि कोई व्यक्ति स्वयं को कलीसिया में मिला सकता है, तब कदाचित सबको स्वीकार किया जा सकता है, बिना किसी के उद्देश्यों की ओर ध्यान दिए। इसी कारण, कलीसिया में मिलाने का कार्य करने के लिये केवल प्रभु ही विश्वासनीय है। वह जानता है कि किसे उद्धार पाए हुओं के झुंड में होना चाहिए, और कौन केवल दिखावे के लिये उसकी आज्ञाओं को मानता है। उससे कोई भी भूल नहीं हो सकती।

जबकि मसीह कलीसिया का उद्धारकर्त्ता है, और वह केवल उद्धार पाए हुए लोगों को ही इसमें मिलाता है, तब स्वभावत: आप यह जानना चाहेंगे कि प्रभु क्या चाहता है कि मनुष्य क्या करे ताकि वह इसमें प्रवेश पा सके। परमेश्वर के वचन में यह स्पष्टता से बताया गया है। विशेष रूप से प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखित विभिन्न नए जन्म के उदाहरणों द्वारा इसे और भी स्पष्ट किया गया है। परन्तु निम्नलिखित विशिष्ट पगों अथवा उपायों की ओर ध्यान दें। प्रभु की कलीसिया में प्रवेश पाने के लिये किसी व्यक्ति को क्या करना है:

1. **मनुष्य को चाहिए कि वह सत्य को सुनें।** "सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों 10:17)
2. **उसे चाहिए कि वह परमेश्वर और यीशु मसीह में विश्वास करे।** "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों 11:6)। प्रभु यीशु ने कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।" (यूहन्ना 14:1)।
3. **उसे चाहिए कि वह अपने पापों से मन फिराए।** "मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगें तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।" (लूका 13:3)।
4. **उसे चाहिए कि वह यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करे।** मसीह ने स्वयं कहा, "जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने मान लूंगा।" (मत्ती 10:32)।
5. **और उसे चाहिए कि वह अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले।** बपतिस्मा पानी में गाढ़ा जाना है (रोमियों 6:3, 4; प्रेरितों 8:36-39)। "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:16)। "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों 2:38)।

अब इस पाठ से हमने क्या सीखा? हमने देखा कि जो उद्धार पाते हैं उन्हें प्रभु स्वयं अपनी कलीसिया में मिलाता है। अर्थात् जब कोई व्यक्ति प्रभु की आज्ञाओं को मानता व

उद्धार पाता है तो वह प्रभु की इच्छा से कलीसिया का सदस्य बन जाता है। हमने यह भी देखा कि प्रत्येक व्यक्ति के लिये सत्य को सुनना, उस पर विश्वास करना, अपने पापों से मन फिराना, मसीह को स्वीकार करना, और बपतिस्मा लेना उद्धार पाने के लिये आवश्यक है। इस रीति से, जब कोई व्यक्ति ऐसा करता है तब वह कलीसिया में सम्मिलित हो जाता है। परमेश्वर की योजनानुसार मनुष्य को उद्धार प्राप्त करने के लिये उसकी आज्ञाओं को मानना आवश्यक है, और तब उद्धार पाए हुओं को प्रभु अपनी कलीसिया में मिलाता है। क्या यह समझना सरल नहीं है?

दूसरे शब्दों में ऐसे इसे कहा जा सकता है, प्रभु यीशु ने कहा कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पाने का केवल एक ही मार्ग है अर्थात् मनुष्य को जल और आत्मा से जन्म लेना आवश्यक है। (यूहन्ना 3:3-5)। किन्तु राज्य क्या है? यह कलीसिया है। (मत्ती 16:18, 19)। सो क्या प्रभु ने मनुष्य को दो मार्ग दिए कलीसिया में प्रवेश पाने के लिये? कतई नहीं। इसलिये, जब कोई व्यक्ति विश्वास करता और बपतिस्मा लेता है (वचन के द्वारा आत्मा से उत्पन्न होकर उसकी शिक्षा को मानता है) तब वह परमेश्वर के राज्य अर्थात् परमेश्वर के परिवार में, जो उसकी कलीसिया है, जन्म लेता है।

फिर, पौलुस ने कहा कि हम सब ने एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया है (1 कुरिन्थियों 12:13)। किन्तु देह क्या है? यह कलीसिया है। (कुलुस्सियों 1:18)। देह कितनी है? केवल एक। (इफिसियों 4:4; इफिसियों 1:22, 23)। इसमें प्रवेश कैसे करते हैं? बपतिस्मा लेकर। परन्तु यीशु मसीह ने कहा कि उद्धार पाने के लिये विश्वास करना और बपतिस्मा लेना चाहिए। (मरकुस 16:16)। बिल्कुल ठीक, कुरिन्थियों ने भी ऐसा ही किया था। (प्रेरितों 18:8)। इसलिये जब कोई व्यक्ति बपतिस्मा लेता है तब वह उसका यानि कलीसिया का अंग बन जाता है अर्थात् उसमें मिला दिया जाता है।

उद्धार पाने के लिये केवल एक ही मार्ग है, जैसा कि अभी हमने देखा, और जो उद्धार पाते हैं उन्हें प्रभु कलीसिया में मिलाता है। क्या आप उस कलीसिया के सदस्य है जिसके विषय में आप बाइबल में पढ़ते हैं? यदि नहीं, तब आपका उद्धार नहीं हुआ है। आपको चाहिए कि आप अध्ययन करें, मालूम करें, और प्रभु की आज्ञा मानें, तब वह स्वयं आपको अपनी कलीसिया में मिलाएगा।

---

# क्या उसने अपने आपको ईश्वरत्व से शून्य कर लिया था?

## बैटी बर्टन चोट

पर क्या इन सब बातों का अर्थ यह है, कि यीशु पृथ्वी पर आने के बाद केवल एक मनुष्य ही था, ईश्वर नहीं था? कुछ लोग उसे परमेश्वर का पुत्र तो अवश्य मान लेते हैं, पर यह मानने से कतराते हैं कि वह वास्तव में परमेश्वर था, और परमेश्वर है।

बाइबल इस विषय में क्या कहती है?

**मसीह को परमेश्वर कहकर स्वीकार किया गया था**

जैसा कि हम ने इससे पूर्व भी देखा है, कि यीशु ने अपने आपको उसी प्रकार से ''मैं हूं'' कहकर सम्बोधित किया था जिस प्रकार से परमेश्वर ने जलती हुई झाड़ी के बीच से मूसा को अपना परिचय दिया था। (यूहन्ना 8:58)। यह कहकर यीशु ने इस बात का प्रमाण दिया था, कि यद्यपि वह एक मनुष्य बनकर मनुष्य के रूप में होकर जगत में आया था परन्तु तौभी वह परमेश्वर ही था।

यूहन्ना 10:30 में इसी बात की पुष्टि यीशु ने यह कहकर की थी कि, ''मैं और पिता एक हैं।''

प्रेरितों: 20:28 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

''परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।''

लहू मसीह ने बहाया था, और उसी को यहां परमेश्वर कहकर सम्बोधित किया गया है।

**मसीह को परमेश्वर मानकर उसकी आराधना की गई थी**

परमेश्वर ने सदा से ही इस बारे में मनुष्यों को चेतावनी दी है, कि उसे छोड़ किसी और की आराधना वे कभी न करें।

> ''तेरा परमेश्वर यहोवा....मैं हूं.....मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना। तू अपने लिये कोई मूर्ती खोदकर न बनाना.....तू उनको दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं, तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला ईश्वर हूं।'' (व्यवस्थाविवरण 5:6-9; 4:15-39)।

प्रकाशितवाक्य 19:9, 10 में एक स्वर्गदूत ने यूहन्ना से कहा था, और यूहन्ना ने इस विषय में इस प्रकार लिखा था:

> ''तब मैं उसको दण्डवत करने के लिये उसके पांवों पर गिर पड़ा। उसने मुझसे कहा, देख ऐसा मत कर, मैं तेरा और तेरे भाईयों का संगी दास हूं.....परमेश्वर ही को दण्डवत कर।''

बाइबल में कहीं पर भी हम ऐसा नहीं पढ़ते कि किसी स्वर्गदूत इत्यादि की उपासना कभी किसी ने की थी। केवल परमेश्वर अर्थात् ईश्वरत्व की ही उपासना के बारे में हम पढ़ते हैं।

इसलिये यदि यीशु ने यह स्वीकार किया था कि उसकी उपासना करना कोई गलत काम नहीं था, तो यह बात भी यही प्रमाणित करती है, कि देहधारी होते हुए भी वह ईश्वर था।

जब यीशु ने आश्चर्यजनक रूप से झील में उठे तूफ़ान को थामा था, तो लिखा है, ''इस पर उन्होंने जो नाव पर थे, उसे दण्डवत करके कहा, सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।'' (मत्ती 14:33)।

यूहन्ना 9:35-38 में हम यीशु के बारे में एक और रोचक घटना के बारे में पढ़ते हैं। इस अध्याय के आरंभ में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने एक ऐसे व्यक्ति को नई आंखें दी थीं जो जन्म से ही अन्धा था। जब यहूदियों के धार्मिक अगुओं ने इस बात को सुना

था तो उन्होंने उस आदमी को और उसके माता-पिता को बुलवाया था और उनसे इस बात की पुष्टि करनी चाहिए थी कि क्या वह वास्तव में एक अन्धा जन्मा था, और उसे कैसे और किसने चंगाई दी है। उस व्यक्ति के माता-पिता ने उन्हें उत्तर देकर इस प्रकार कहा था:

''हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अंधा जन्मा था; परन्तु हम यह नहीं जानते हैं कि अब कैसे देखता है, और न यह जानते हैं कि किसने उसकी आंखें खोली हैं। यह सयाना है, उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा। यह बातें उसके माता-पिता ने इसलिये कहीं क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे, क्योंकि यहूदी एकमत हो चुके थे कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालय से निकाला जाए।'' (यूहन्ना 9:20-22)।

उस समय के हिसाब से, यदि किसी को आराधनालय से बाहर निकाल दिया जाता था तो इसका अर्थ यह होता था कि परमेश्वर से उसका सम्बंध टूट जाता था। क्योंकि उस समय आराधना परमेश्वर के मन्दिर में केवल याजकों के द्वारा ही करना सम्भव था।

बाद में उन अगुओं ने उस व्यक्ति को, जिसकी आंखें यीशु ने खोली थीं, यह समझाने का भरपूर प्रयत्न किया था कि वह जिसने उसकी आंखें खोली हैं परमेश्वर का जन हो ही नहीं सकता। परन्तु उसने उनसे कहा था,

''यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता। उन्होंने उसको उत्तर दिया, तू तो बिल्कुल पापों में जन्मा है, तू हमें क्या सिखाता है? और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।'' (यूहन्ना 9:33, 34)।

यीशु जानता था, कि उस मनुष्य ने जो कुछ भी उसके बारे में कहा था उसी के कारण यहूदियों ने उसे मन्दिर से बाहर निकाल दिया था। यीशु ने उस पर दया दिखाई, और उस से एक ऐसी बात कही जिस पर उस समय बहुत ही थोड़े लोग विश्वास कर सकते थे: यीशु ने उससे अपने बारे में कहा था कि, वह परमेश्वर का पुत्र है। यह बात सुनकर उस व्यक्ति ने यीशु से कहा था,

''हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं। और उसे दण्डवत किया।'' (यहून्ना 9:38)।

फिर हम यह भी पढ़ते हैं, कि मरे हुओं में से जी उठने के बाद, जब वह अपने चेलों को दिखाई दिया था, और उसने उन्हें अपने घाव दिखाए थे, तो उनमें से थोमा नाम के एक चेले ने देखकर उससे कहा था,

''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर'' (यूहन्ना 20:28)।

प्रकाशितवाक्य 5 अध्याय में यीशु को परमेश्वर के मेम्ने के समान दर्शाया गया है, जिसके सामने सारे स्वर्गदूत और प्राचीन उसकी प्रशंसा में एक नया गीत गाकर कह रहे थे:

''वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ्य और धन और ज्ञान और शक्ति और आदर और महिमा और धन्यवाद के योग्य है।'' (प्रकाशितवाक्य 5:12)।

**यीशु ने ईश्वर के समान पाप क्षमा किये थे**

एक और प्रमाण यीशु के परमेश्वर होने का हमें इस बात में मिलता है कि यीशु ने लोगों के पाप क्षमा किये थे। यदि कोई मेरे विरूद्ध कोई गलत काम करता है, तो यह मेरे ऊपर निर्भर करता है कि मैं उसे क्षमा करूं या न करूं। मनुष्य परमेश्वर के विरूद्ध पाप करता है। इसलिये यह परमेश्वर का ही अधिकार है कि वह मनुष्य के पाप क्षमा करे। यहूदी लोग इस बात से परिचित थे। इसलिये मत्ती 9:2 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि जब यीशु ने लकवे से पीड़ित एक व्यक्ति से कहा था, ''हे पुत्र ढांढ़स बांध; तेरे पाप क्षमा हुए,'' तो यहूदियों ने यह सुनकर कहा था, ''यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।'' तब लिखा है:

> ''यीशु ने उनके मन की बातें जानकर कहा, तुम लोग अपने-अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो? सहज क्या है? यह कहना कि ''तेरे पाप क्षमा हुए,'' या यह कहना, ''उठ और चल फिर।'' परन्तु इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है। तब उसने लकवे के रोगी से कहा, ''उठ, अपनी खाट उठा और अपने घर चला जा'' तब वह उठकर अपने घर चला गया।'' (मत्ती 9:4-7)।

फिर, हम लूका 7:48, 49 में उस स्त्री के बारे में पढ़ते हैं, जिसने अपने आंसुओं से यीशु के पांव भिगोकर पोंछे थे। यीशु ने उस से कहा था:

> ''तेरे पाप क्षमा हुए। तब जो लोग उसके साथ भोजन पर बैठे थे, वे अपने-अपने मन में सोचने लगे, यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?''

सो जिस प्रकार से एक मनुष्य सदा मनुष्य ही रहेगा, ऐसे ही परमेश्वर भी परमेश्वर ही बना रहेगा। वचन, देहधारी बनकर पृथ्वी पर आने के पश्चात् भी, परमेश्वर ही था।

इसलिये, जब बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि वचन देहधारी होकर मनुष्यों के बीच में आया था (यूहन्ना 1:14), और उसने अपने आपको शून्य कर दिया था और वह एक दास बन गया था (फिलिप्पियों 2:7) तो इसका अर्थ क्या है? परमेश्वरत्व में इस परिवर्तन के फलस्वरूप वास्तव में क्या घटा था? क्या यह बदलाव केवल ऐसा ही था जेसे कोई कपड़े बदलता है, अर्थात् भीतर से वह वही था जो वह आदि से था, परन्तु उसने अपने ऊपर ''मानवता का पहरावा'' पहन लिया था? फिर, यदि वह परमेश्वर का पुत्र होने के कारण परमेश्वर था और वह उपासना के योग्य था, तो फिर इस कथन का अर्थ क्या है:

> ''इस कारण उसको चाहिए था कि सब बातों में अपने भाईयों के समान बने''? (इब्रानियों 2:17)।

---

# ''जिसके लिए मसीह मरा''

## डेविड रोपर

मण्डलियों के झगड़े आमतौर पर छोटे-छोटे होते हैं। और कई तो बहुत मामूली होते हैं, जैसे ''ढंग और उदाहरण तथा प्रभाव।''

**ढंग: ''हमें इस कार्य को कैसे पूरा करना चाहिए?''**

**उदाहरण: ''क्या आपने पहले कभी ऐसा किया है?''**

**प्रभाव: ''काम हो जाने पर श्रेय किसे मिलेगा?''**

रोमियों 14:13-18 में पौलुस ने इस प्रकार की असहमतियों को ऊंचे स्तर पर उठा दिया। जब हम किसी भाई के साथ सहमत नहीं होते, तो हम उसे हठधर्मी, ढीठ या यहां तक कि शायद घृणित भी मानने लगते हैं। पौलुस ने चाहा कि हम उसे उस व्यक्ति के रूप में देखें ''जिसके लिए मसीह मरा'' (आयत 15ग)। ये चार शब्द हमारे दिलों में समा जाने चाहिए कि '' जिसके लिए मसीह मरा।'' टी. आर. ग्लोवर ने सुझाव दिया कि उन ''चार शब्दों ने [अमेरिका में] गुलामी खत्म कर दी।'' हाफर्ड लकॉक ने उन्हें ''नि:स्वार्थ आचरण के लिए अब तक का सबसे शक्तिशाली तर्क'' कहा था।

रोमियों 14 की पहली बारह आयतों का अध्ययन करते हुए हमने देखा था कि पौलुस ने ''निर्बल'' और ''बलवान'' दोनों तरह के मसीही लोगों से बात की थी। अध्याय के अन्तिम भाग में, उसने अपनी टिप्पणियां ''बलवान'' भाई के लिए दीं। वह चाहता था कि ''बलवान'' भाई ''निर्बल'' भाई पर एक नजर फिर डालें। ''निर्बल'' भाई को विरोधी के रूप में देखने के बजाय पौलुस ने बलवान से चाहा कि वह उसे अवसर के रूप में देखे यानी उसकी सहायता करने के अवसर के रूप में ''जिसके लिए मसीह मरा।''

### एक संवेदनशील भाई (रोमियों 14:12ख, 14)

**कुछ निश्चित करने के लिए (आयत 13)**

आयत 13 का आरम्भ ''सो'' से होता है, जो इसे 1 से 12 आयतों को जोड़ता है। पहले तो यह आयत पिछले पाठ के संदेश को संक्षिप्त करती है: ''सो आगे को हम एक-दूसरे पर दोष न लगाएं'' (आयत 13क)। बहुत से कारण हैं कि हमें दूसरों पर दोष लगाने में उतावली नहीं करनी चाहिए।

सर्वव्यापी न होने के कारण, हम सभी तथ्यों को नहीं जानते हैं। लोगों के मनों में न देख पाने के कारण हम उनके उद्देश्य को नहीं पढ़ सकते हैं। सीमित होने के कारण, हमें ''बड़ी तस्वीर'' नहीं मिलती है। आत्मिक नजर कमजोर होने के कारण अंधबिन्दुओं में और अस्पष्ट दुष्टिकोणों में रहते हैं। हम में से अधिकतर मनुष्य होने के कारण अपूर्ण, असंगत और काल्पनिक होते हैं।

आयत 13 के आरम्भिक निर्देशों में शब्दों का खेल है: ''सो आगे को हम एक-दूसरे पर दोष [krino से] न लगाएं पर तुम यही ठान लो [krino से]'' (आयत 13क, ख)। KJV में krino के दोहरे इस्तेमाल का संकेत मिलता है: ''इसलिए अब से हम में से कोई

एक दूसरे का न्याय न करे: परन्तु इसके बजाय यह न्याय करो ...।'' हमें दूसरों का न्याय करना बन्द करके अपना न्याय करना आवश्यक है।

पौलुस ने सही की आवश्यकता के साथ सही व्यवहार की आवश्यकता को मिला दिया: ''... ठान लो ... कि कोई अपने भाई के सामने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे'' (आयत 13ख, ग)। यूनानी शब्द जिनका अनुवाद ''ठेस'' और ''ठोकर'' किया गया है, का एक ही अर्थ है। ''ठेस'' शब्द proskomma (pros [''के लिए''] और kopto [''मारना'']) से लिया गया है, जिसका अर्थ ''कोई रूकावट जिसमें किसी का पैर लग सकता है।'' ''ठोकर'' शब्द skandalon से लिया गया है, जिससे हमें अंग्रेजी का ''scandal (स्कैंडल)'' और ''scamdalous (स्कैंडलस)'' शब्द मिला है। मूल में skandalon शब्द ''उस जाल को कहा जाता था जिससे चारा जोड़ा जाता [था]।'' CJB में इस शब्द का अनुवाद ''जाल'' के रूप में किया गया है; आर.सी.एच. लैंसकी के अनुवाद में ''खतरनाक जगह'' शब्द इस्तेमाल किया गया है। नये नियम में skandalon का इस्तेमाल बदलने वाले के लिए किया जाता है और इसका संकेत वह होता है, जो ''दूसरों के लिए रूकावट बनता है, या मार्ग में उनके गिरने का कारण बनता है।''

इस पाठ में आगे चलकर हम चर्चा करेंगे कि किसी भाई के मार्ग में ठेस या ठोकर रखने का पौलुस का क्या अर्थ है। अभी के लिए हम इस मूल सच्चाई को साबित करते हैं: हम कोई ऐसी बात न करें जिससे किसी भाई को ठेस लगे या वह गिर जाए। हमारे मनों में एक प्रश्न रहना चाहिए कि ''अपने भाई को प्रभावित करने के लिए मैं क्या करुंगा?'' संसार के लोग अपने अधिकारों के प्रति चिन्तित हैं, परन्तु मसीही लोगों को अपनी जिम्मेदारियों के प्रति अधिक चिन्तित होना चाहिए।

**कुछ जानना (आयत 14)**

आयत 14 का आरम्भ मांस खाने के मुद्दे पर परमेश्वर की प्रेरणा से पौलुस की मजबूत अभिव्यक्ति के साथ होता है: ''मैं जानता हूं, और प्रभु यीशु से मुझे निश्चय हुआ है'' (आयत 14क)। पौलुस के यह कहने का ढंग था कि ''मेरे मन में किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है।'' ''प्रभु यीशु से'' का अर्थ हो सकता है कि पौलुस को इस विषय पर यीशु से विशेष प्रकाशन मिला हो, या इन शब्दों का अर्थ हो सकता है कि प्रभु के साथ अपनी लम्बी संगति के कारण वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा हो।

पौलुस को किस बात पर इतना यकीन था? ''कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं'' (आयत 14ख)। ''अशुद्ध'' (koinos [''साधारण''] से) शब्द यहूदी लोगों द्वारा उसके लिए इस्तेमाल किया जाता था जो ''औपचारिक रूप से अशुद्ध'' होता था। पौलुस की बात में कुछ गुण होना आवश्यक है क्योंकि अन्य पत्रों में वह ''बिल्कुल स्पष्ट है कि हमारे कुछ विचार, बातें और काम बहुत बुरे होते हैं।'' मूल में परमेश्वर ने यह घोषणा की थी कि उसने जो कुछ बनाया, वह सब ''अच्छा'' था (उत्पत्ति 1:31), परन्तु (सारी नहीं तो) उसकी अधिकतर सृष्टि या तो श्रापित हुई या उसका दुरुपयोग हुआ। तौभी ''अपने आप में'' (अपने आवश्यक स्वभाव में) सृष्टि ''अच्छी'' ''शुद्ध'' रहती है (देखें 1 तीमुथियुस 4:4)। संदर्भ में पौलुस विशेष रूप से मांस की बात कर रहा था।

मांस मुर्तियों को भी भेंट किया गया हो, या चाहे यह कोशर की शर्तों के अनुसार तैयार किया गया तो भी कोई मांस ''अपने आप में अशुद्ध'' नहीं था।

पौलुस की बात पर ध्यान दें ''परन्तु जो उस को अशुद्ध समझता है, उसके लिए अशुद्ध है'' (रोमियों 14:14ग)। क्यों? ''क्योंकि वह शुद्ध विवेक से इसका इस्तेमाल नहीं कर सकता या इसमें भाग नहीं ले सकता। विवेक के विषय में हमें इस महत्वपूर्ण सच्चाई को समझने की आवश्यकता है कि यदि आपका विवेक आपको बताता है कि आप के लिए कोई बात गलत है तो वह गलत है। रोमियों 2:14, 15 की अपनी चर्चा में हमने देखा था कि विवेक की बात को न तोड़ना कितना आवश्यक है। जब कोई व्यक्ति वो करने पर जोर देता है जिसे उसका विवेक गलत कहता है, तो वह अपने विवेक को धोखा देता है (देखें 1 तीमुथियुस 4:2) जिससे वह सुरक्षा देने का परमेश्वर द्वारा दिया काम पूरा करने में नाकाम रहता है। यदि किसी ने अपने मन में गलत अवधारणा बना रखी है (जैसे ''निर्बल'' भाई ने किया), तो विवेक को फिर से सिखाया जाना आवश्यक है; परन्तु जब तक उसे सिखाया नहीं जाता, तब तक उसे अपने विवेक के विरूद्ध नहीं जाना चाहिए। यदि वह ''किसी भी चीज को अशुद्ध मानता है तो उसके लिए यह अशुद्ध है।''

निर्बल हो या ''बलवान'' आयत 14 में हर मसीही के लिए संदेश है, परन्तु याद रखें कि पौलुस के शब्द विशेषकर ''बलवान'' व्यक्ति के लिए हैं। प्रेरित ''बलवान'' भाई के प्रति ''निर्बल'' भाई से अधिक समझ रखने, उसके लिए अधिक तरस रखने की इच्छा रखता था। वह एक संवेदनशील भाई था, जिसके लिए मसीह मरा।

---

# परमेश्वर की पुस्तक

## गैरी सी. हैम्पटन

बाइबल का अध्ययन आरम्भ करने से पहले, हमें यह मानना आवश्यक है कि यह परमेश्वर का वचन है। इससे हमें और गम्भीर होकर इसका अध्ययन करने में सहायता मिलेगी।

बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से होने का दावा करती है। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि ''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। जहां पर हमें ''प्रेरणा'' शब्द मिलता है वहां पौलुस ने उसकी जगह यूनानी शब्द थियोप्नियुस्टोस (theopneustos) का इस्तेमाल किया है। थियो का अर्थ ''परमेश्वर'' और प्नियुस्टोस का अर्थ ''श्वास दिया'' है। इस कारण यह परमेश्वर का दिया हुआ श्वास या परमेश्वर के श्वास से दिया हुआ है। कहने का अर्थ यह है कि परमेश्वर ने बोला, क्योंकि बोलने के लिए हम स्वर-तंत्रियों के द्वारा सांस निकालते या छोड़ते हैं।

पतरस ने प्रेरणा का अर्थ समझाया जब उसने लिखा, ''क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी

मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे'' (2 पतरस 1:21)। इब्रानियों का लेखक इस बात को समझता होगा इसीलिए उसने बार बार कहा था कि परमेश्वर ने कोई बात कही है।

नये नियम के कुछ लेखकों की तरह पूराने नियम के कई लेखकों ने भी परमेश्वर की प्रेरणा का दावा किया (देखें यशायाह 1:1, 2, 10, 24; यिमर्याह 1:1, 2; 2:1; यहेजकेल 1:1-3; 1 थिस्सलुनीकियों 2:13; 2 पतरस 3:2)। यीशु पुराने नियम की बाइबल को परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई मानता था और उसे प्रामाणिक मानते हुए इसका इस्तेमाल करता था (मत्ती 4:4, 7, 10)। संसार मे उसके आने का पूरा उद्देश्य पुराने नियम की भविष्यवाणी को पूरा करके परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना था (मत्ती 5:7-18; यूहन्ना 15:25)। नये नियम के लेखक पुराने नियम के लेखकों को परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए मानते थे (प्रेरितों 1:15, 16; 4:25; 28:25-27; गलातियों 3:16-19)।

ऐसे अंदरूनी दावे किसी काम के नहीं होने थे यदि उनका कोई प्रमाण नहीं होता। वास्तव में ऐसे दावे हमें उनकी वैधता को परखने को विवश करते हैं। उन वैज्ञानिक तथ्यों के कारण जो मनुष्य के उन्हें जानने या मानने से बहुत पहले लिखे गए थे। हम जानते हैं कि बाइबल परमेश्वर की ओर से है। उत्पत्ति 1:11, 12, 21, 24, 25 में हम घास, वृक्षों, मछलियों, पक्षियों, पशुओं तथा अन्य जीव-जंतुओं के ''एक एक की जाति के अनुसार'' होने की बात पढ़ते हैं। ये बातें इस तथ्य के बावजूद कही गई हैं कि मनुष्य सदियों बाद तक स्वाभाविक पीढ़ी की बात को मानता रहा। केवल हाल ही में डॉक्टरों को आठ दिन के लड़के के लहू में उन विशेष तत्वों का पता चला है जो चंगाई के लिए सहायक होते हैं। फिर भी हजारों साल पहले मूसा ने परमेश्वर की प्रेरणा से लिख दिया था कि लड़के का खतना आठवें दिन किया जाए (लैव्यव्यवस्था 12:3) जॉर्ज वशिंग्टन के जमाने में डॉक्टरों का मानना यह था कि मरीज का लहू बहने से उसके शरीर की गंदगी निकल जाती है। बिल्कुल वैसे जैसे बहुत पहले मूसा ने लिखा दिया था, अब डॉक्टरों को भी समझ में आ गया है कि प्राण लहू में है (उत्पत्ति 9:4; लैव्यव्यवस्था 17:11, 14)।

भविष्य में सैकड़ों वर्ष बाद होने वाली घटनाओं की विशेष भविष्यवाणियां तभी सही हो सकती थीं यदि वे परमेश्वर की प्रेरणा से होती। बाइबल में ऐसी भविष्यवाणी के पूरा होने के ढेरों उदाहरण हैं। केवल मसीह के मामले में ही हमें उनके घटने से पहले, 400 से 700 भविष्यवाणियां मिलती हैं जोकि अनुमान या तुक्के नहीं हो सकते। उसके जन्म-स्थान और यह बात कि उसकी माता ने कुंवारी होना था, मीका 5:2 और यशायाह 7:14 में मिलती है। मत्ती हमें बताता है कि उसका जन्म बैतलहम में एक कुंवारी की कोख से हुआ था (मत्ती 21:1-5 में पूरी होने वाली यरूशलेम में उसके विजयी प्रवेश की भविष्यवाणी, जकर्याह 9:9 में की गई थी।

बाइबल में हुए आश्चर्यकर्म यह साबित करते हैं कि बोलने वाले लोग परमेश्वर की ओर से होते थे। इस्त्राएलियों के पास यह साबित करने के लिए कि उन्हें परमेश्वर की

ओर से भेजा गया था, परमेश्वर ने कुछ चमत्कारी चिन्ह दिखाए (निर्गमन 4:2-5)। मिस्त्र देश पर दस विपत्तियां लाकर किए गए चमत्कार यह साबित करने के लिए थे कि संसार में एक ही परमेश्वर है और वह मूसा और अपनी प्रजा के साथ है (निर्गमन 7:5, 17; 8:10, 14-29; 10:2 11:7; 13:3; 14:14)। मसीह यह साबित करने के लिए मरे हुओं में से जी उठा कि वह परमेश्वर का भेजा हुआ है (रोमियों 1:4)। प्रेरितों का परमेश्वर की अगुआई में बोलना उन चिन्हों के कारण था जो वे दिखा सकते थे, बिल्कुल स्पष्ट है (मरकुस 16:14-20; इब्रानियों 2:3, 4)।

और प्रमाण की भी बात की जा सकती है, जैसे बाइबल की ऐतिहासिक सत्यता; 30 से अधिक लेखकों द्वारा 1,600 से अधिक वर्षों में अलग अलग भाषाओं में लिखी गई 66 पुस्तकों की एकता; भौगोलिक सत्यता; संदेश के महत्व को देखा जा सकता है। परन्तु मेरा मानना है कि उन निर्विवाद प्रमाणों से हम देख सकते हैं कि बाइबल ''परमेश्वर के श्वास से '' होने का दावा करती है।

## धन्यवाद करना

यदि तुम परमेश्वर होते और वह तुम्हारी जगह पर होता और तुम उसे आराधना, स्तुति और प्रार्थना करने के लिए जाने देने के लिए एक दिन की छूट्टी दे देते और फिर वह बेपरवाही से तुम्हारी या प्रार्थना की कोई परवाह किए बिना इधर उधर घूमता रहता या तुम्हारे प्रेम और सम्भाल के लिए धन्यवाद न देता, यदि तुम परमेश्वर होते और वह तुम्हारी जगह पर होता। तो बताओ कि तुम क्या करते?

यदि तुम परमेश्वर होते और वह तुम्हारी जगह पर होता एक जाति ने प्रार्थना के लिए एक दिन ठहराया होता, परन्तु केवल वह समय न निकालती। हर उस सौ में से, जो परवाह नहीं करता तुम्हें लगता है कि वे गम्भीर हैं और अगले साल उस जाति को आशीष दे देते? यदि तुम परमेश्वर होते और वह तुम्हारी जगह पर होता। तो बताओ तो तुम क्या करते?

यदि तुम परमेश्वर होते और वह तुम्हारी जगह पर होता और लाखों लोग कहते कि तुम पर उन्हें विश्वास है कि तुम हर अच्छी चीज के देने वाले हो। परन्तु वे कभी ''धन्यवाद'' न कहते या कहना उचित न मानते परन्तु फिर जब मुसीबत आने पर, बिना देरी किए तुम्हारी सहायता की उम्मीद करने लगते यदि तुम परमेश्वर होते और वह तुम्हारी जगह पर होता। तो बताओ तो तुम क्या करते?

# क्या संसार यूं ही अस्तित्व में आ गया?

### बर्ट थॉम्पसन

इस दृश्य की कल्पना करें। आप ने अभी-अभी एक नई कैडिलैक लिमोसिन (Cadillac limousine) खरीदी है और आप इसे अपने कुछ मित्रों को दिखा रहे हैं। आप उन्हें बताते

हैं कि किस प्रकार से धातु को पिघलाकर इसके फैंडर, बम्पर, टेल-पाइपें आदि बनाए गए। आप उन्हें रबर और लोहायुक्त बैल्टों वाले टायरों के साथ-साथ यह भी दिखाते कि उसका क्रोम ट्रिम कितना स्लिक है। आप दरवाजा खोलकर अपने मित्रों को उसके अन्दर का कार्पेट, लैदर और टीक के दरवाजों की सुन्दरता दिखाते हैं। उसमें एक डिजिटल घड़ी है, टच बटन से ऊपर नीचे होने वाली खिड़कियां, आपतकालीन लाइटें, पीछे वाली खिड़की का डिफ्रॉस्टर और अन्य बहुत सी सुविधाएं हैं। आपका एक मित्र कहता है, कि आपकी गाड़ी तो बड़ी सुन्दर है। आप जवाब देते हैं कि आपको गर्व है कि आपके पास लगभग 96 लाख कीमत की नई गाड़ी है।

फिर आपका एक और मित्र आपकी ओर मुंह करते हुए पूछता है, ''यह कार किसने बनाई है?'' बिना किसी हिचक के आप तुरन्त उत्तर देते हैं, ''इसे किसी ने नहीं बनाया, यह तो खुद ही बन गई है।'' क्या आप ऐसा होने की कल्पना कर सकते हैं? ऐसे किसी दृश्य का सुझाव देने पर आपके मित्र कहेंगे कि आपका दिमाग ठिकाने नहीं है। यह हर समझदार व्यक्ति को पता है कि इंजीनियरिंग का बेहतरीन नमूना जिसे हम कैडिलैक कहते हैं ''खुद नहीं बना है।''

परन्तु यह संसार कैडिलैक लिमोसिन (Cadillac limousine) से कहीं अधिक जटिल है। और आप से हर रोज यही मान लेने को कहा जाता है कि यह संयोग से ''यूं ही बन गया।'' संसार में 25,00,000 से अधिक आकाशगंगाएं हैं। 25 अंक या सैक्सटिल्यन ($25x10^{21}$) से अधिक तारों का अस्तित्व बताया जाता है (हमारी सब से शक्तिशाली दूरबीनें अभी इतनी ही दूरी तक देख सकती हैं)। हमारी आपनी आकाशगंगा का घेरा 1 लाख प्रकाश वर्ष से अधिक है। प्रकाश की गति एक वर्ष में $5.87\times10^{12}$ मील है। 1,00,000 (यानी $10^5$) वर्ष में यह $5.86\times10^{12}$ मील दूर जाएगा। हमारा सबसे नजदीक पड़ोसी एंड्रोमेटडा गलैक्सी हमसे 7,50,000 से अधिक प्रकाश वर्ष दूर है। यह $4.4\times10^{18}$ मील दूर है।

सूर्य जो हमारी आकाशगंगा को गर्माहट देता है, पृथ्वी से 9,30,00,000 मील दूर अंतर (यानी अंतरिक्ष) में टिका हुआ है। यदि यह केवल 10% हमारे निकट आ जाए तो सचमुच में हर चीज को भून सकती है। यदि यह केवल 10% पीछे चला जाए तो तापमान इतना गिर जाएगा कि जीवन का अस्तित्व ही नहीं होगा। चांद, जो कि पृथ्वी से 2,40,000 मील की दूरी पर है, यदि केवल पांचवां भाग (20%) और निकट आ जाए तो पृथ्वी पर दिन में दो बार 35-50% फुट ऊंची लहरें उठने लगेंगी।

पृथ्वी सूर्य के गिर्द प्रति घण्टा 70,000 मील या प्रति सैकिण्ड 19 मील (याद रखें कि 1 मील=1.6 कि.मी. होता है) की गति से घूम रही है। सौर मण्डल खुद इतने बड़े मार्ग पर 6,00,000 मील (यानी 9,60,000 कि.मी.) प्रति घण्टा की गति से अंतरिक्ष में घूम रहा है कि इसे एक परिक्रमा को पूरा करने के लिए लगभग 22 करोड़ वर्ष लगते हैं। यदि पृथ्वी केवल 35,000 मील प्रति घण्टा की गति से चलती है तो हमारे मौसम दुगने हो जाएंगे और गर्मी इतनी अधिक बढ़ जाएगी कि पृथ्वी जल जाएगी। और अत्यधिक सर्दी से यह जम जाएगी। पृथ्वी के सोरमण्डल में 21% ऑक्सिजन है। मान लो कि यदि

यह थोड़ी सी यानी 10-15% कम हो जाए, तो मनुष्य और जानवरों के लिए सांस लेने वाली हवा की कमी होने के कारण वे मर जाएंगे।

ये सभी चीजें कैडिलैक लिमोसिन से बहुत जटिल हैं, फिर भी हम से हर रोज यही मान लेने को कहा जाता है कि जैव विकास की बात सही है और ये बातें यूं ही संयोग से हो गई। अगर हम यह नहीं मान सकते कि लिमोसिन संयोग से ''यूं ही बन गई'' तो यह कहते हुए कि इतना बड़ा संसार ''यूं ही बन गया'' हम कौन से तर्क का इस्तेमाल कर रहे होते हैं?

---

# पत्थर चिल्लाते हैं

## वेन जैक्सन

पिछले कई वर्षों से पलिश्तीन में पुरातत्व की कई महत्वपूर्ण खुदाइयां हुई हैं जिनसे बाइबल के ऐतिहासिक रूप में सही होने की ओर पुष्टि हुई है।

शकेम में होने वाली खुदाइयों से, जहां पर उत्पत्ति की पुस्तक बताती है कि अब्राहम ने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई थी (उत्पत्ति 12:6, 7), पता चलता है कि लगभग 4000 वर्ष पहले यानी पुरखाओं के समय में, वहां पर एक विकसित समाज रहता था।

पलिश्तीन के केन्द्रीय इलाके में खुदाई से पत्थर की पट्टियां मिलीं है जिस पर एक्रोन नाम खुदा हुआ है। यह वही नगर है जहां पर पलिश्तियों द्वारा कब्जा किए जाने के बाद, वाचा का संदूक ले जाया गया था (1 शमूएल 5:1-10)।

पुरातत्वविद एक बार दक्षिणी इस्त्राएल के मसादा में 2000 वर्ष पुराने कूड़े के ढेर को खंगाल रहे थे। उन्हें मय का एक बर्तन मिला, जिसके ऊपर राजा हेरोदेस का नाम खुदा हुआ है। इस प्रसिद्ध राजा से जुड़ी मिलने वाली अब तक की यह पहली चीज है। (हेरोदेस अंतिपास जिसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कटवा दिया था।)

इस्त्राएली पुरातत्वविदों को गोलान की ऊंचाइयों में तेल दान नामक जगह की खुदाई करते हुए एक प्राचीन यादगार (जिसे स्टेले कहा जाता है) यानि एक पत्थर मिला। यह अरामी भाषा में खुदा हुआ है, जिस पर ''इस्त्राएल का राजा'' और ''दाऊद का घराना'' शब्द अंकित हैं। बहुत से उदारवादी आलोचक यह मानने को तैयार नहीं होते थे कि दाऊद नाम का कोई व्यक्ति कभी रहा होगा। यानी उसे प्राचीनकाल के इस्त्राएल का ''काल्पनिक बात'' ही माना जाता था। उदारवादी लोग यह मानने को विवश हो गए हैं कि इस्त्राएल के मधुर गायक के ऐतिहासिक होने की बात पर बाइबल सही है।

हाथी दांत का एक अनार प्रकाश में आया, जिसे इस्त्राएली अधिकारियों से +5,50,000 में खरीदा गया। अब इस कलाकृति को सुलैमान के मन्दिर में से मिलने वाला पहला चिन्ह माना जाता है (सम्भवतया सजावट की चीजों में से एक, देखें 1 राजाओं 6)। इसके ऊपर अंकित है: ''याजकों के लिए पवित्र, यहोवा के मन्दिर का।''

यहोशू की पुस्तक में कनान पर इब्रानी आक्रमण से हासोर नगर के नष्ट होने को

बताया गया है। इस नगर को इस्त्राएलियों ने फूंक दिया था (यहोशू 11:10, 11)। खुदाइयों से पता चला है कि इस नगर को सचमुच में यहोशू के समय में आग लगा दी गई थी।

ऐसे समय में जब अधिक से अधिक लोग बाइबल के प्रमाणिक होने पर आक्रमण कर रहे हैं, यह जानना सुकून देने वाला है कि पुरातत्वविदों का फावड़ा बाइबल के ऐतिहासिक रूप में सही होने की पुष्टि करता जा रहा है। (किसी और संदर्भ में ही सही परन्तु) यीशु की बात ध्यान में आती है जहां उसने कहा था कि ''पत्थर चिल्ला उठेंगे।''

उसने उत्तर दिया, ''मैं तुम से कहता हूं, यदि ये चुप रहें, तो पत्थर चिल्ला उठेंगे'' (लूका 19:40)।

---

# ''हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त होती रहे'' (इफ़िसियों 1:2)

## ऑवन डी. आलब्रट

पौलुस ने लिखा तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे, जो उसके अधिकतर अन्य पत्रों में सलाम लिखने जैसा हैं। ''अनुग्रह'' यूनानी सलाम है (आम तौर पर सांसारिक यूनानी में यह सामान्य क्रिया (chairein) और ''शान्ति'' एक यहूदी ''अनुग्रह'' (charis) मनोहरता, सुन्दरता और समर्थन है, जो किसी व्यक्ति के पास है या उसके द्वारा व्यक्त किया जाता है और उन लोगों द्वारा पाया जाता है जिन्हें यह दिया जाता है। पवित्र शास्त्र में ''अनुग्रह'' शब्द के पांच उपयोग बताए गए हैं।

1. कृपालु होना या दयालु (लुका 4:22; कुलुस्सियों 4:6)।

2. स्वीकृति या समर्थन (लूका 1:30; प्रेरितों 2:47)।

3. दान (2 कुरिन्थियों 4:15; 8:4)।

4. धन्यवाद और आभार (लूका 17:9; 1 कुरिन्थियों 15:57; कुलुस्सियों 3:16; 2 तीमुथियुस 1:3)।

5. समर्थन जिसे कमाया न गया हो और जिसके योग्य न हो, परन्तु नि:शुल्क दिया गया हो (रोमियों 3:24; इफिसियों 2:8)।

मत्ती या मरकुस की पुस्तक में चाहे charis नहीं मिलता, परन्तु लूका में यह आठ बार, यूहन्ना में चार बार और पौलुस के पत्रों में एक सौ बार मिलता है।

इब्रानी शब्द बीमद के अनुवाद के रूप में बींतपे शब्द मिलता है, यह किसी बड़े व्यक्ति द्वारा दी गई आशिषों के आनन्द को दिखाता है। इसका इस्तेमाल लोगों पर दिखाए गए परमेश्वर के अनुग्रहकारी समर्थन और दयालुता के लिए हो सकता है। दयालुता (रोमियों 15:15) या पापियों पर दिखाए गए उसके समर्थन के लिए जिसके कोई योग्य न हो (इफिसियों 2:8) हो सकता है। परमेश्वर और मनुष्य के बीच के फासले को अनुग्रह के द्वारा मिटाया गया है।

यीशु ने अपने लहू के द्वारा (इफिसियों 1:7) जो उसने क्रूस पर बहाया, सब लोगों के लिए अनुग्रह की पेशकश की है (रोमियों 5:15)। इस अनुग्रह तक पहुंच विश्वास के द्वारा (रोमियों 5:2) अर्थात उस विश्वास के द्वारा होती है, जो परमेश्वर की इच्छा को मानने वाला है (याकूब 3:24)। उद्धार परमेश्वर के अनुग्रहकारी होने के कारण दिया जाता है (इफिसियों 2:8, 9) और इसे मानवीय गुण के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। यीशु ने चाहे अपने लोगों के लिए उद्धार को कमाया (मत्ती 1:21) परन्तु उस उद्धार को केवल उसके आज्ञापालन के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है (इब्रानियों 5:9)। उसने अपनी मृत्यु में दूसरों के हाथों में अपने आपको दे दिया; इस बात में उसने उद्धार दिलाने के लिए कोई काम नहीं किया। इसी प्रकार से उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेने के लिए (रोमियों 6:3) और पापों की क्षमा पाने के लिए (प्रेरितों 2:38) दूसरे के हाथ अपने आपको देना आवश्यक है। मसीह में अनुग्रह (2 तीमुथियुस 2:1) तब प्रभावी होता है जब पापी व्यक्ति मसीह में बपतिस्मा लेता है। मानवीय गुण के धार्मिक कामों के द्वारा नहीं बल्कि विनम्रतापूर्वक अधीनता के द्वारा नये जन्म का स्नान प्राप्त होता है (तीतुस 3:5-7)। इस कारण उद्धार यीशु की मृत्यु और जीवन के द्वारा दिया जाता है (रोमियों 5:9, 10)।

कुलुस्सियों के नाम अपने सलाम में पौलुस उस न कमाए हुए समर्थन की बात नहीं कर रहा था, जिससे उद्धार मिलता है। उन्हें उद्धार पहले ही मिल चुका था। बल्कि वह चाहता था कि वे अपने अनुग्रहकारी सृष्टिकर्त्ता की ओर से प्रतिदिन समर्थन पाते रहें, जिसने उन की शारीरिक और आत्मिक भलाई के लिए उपाय करना था। मसीहियत में केवल उद्धार के लिए अनुग्रह पाना ही नहीं, बल्कि निरन्तर बहुतायत का जीवन भी है (यूहन्ना 10:10), जिससे आत्मा के लिए एक स्वस्थ संतुष्टि मिलती है। यही वह अनुग्रह है जिसे पौलुस ने उनके लिए परमेश्वर से चाहा।

पौलुस ने परमेश्वर की ओर से शान्ति का भी उल्लेख किया। ''शान्ति'' के लिए इब्रानी भाषा का शब्द shalom है जिसका अर्थ परमेश्वर की ओर से आशिषें मिलने के कारण स्वस्थ स्थिति है। ''शान्ति'' के लिए यूनानी शब्द मपतमदम है। शान्ति में मेल, निर्विवाद भलाई, परेशान मन से मुक्ति, और बिना झगड़े या आन्तरिक क्लेशों का आत्मिक चयन आ जाता है। यीशु अपने चेलों के लिए शान्ति देता है। यह वह शान्ति नहीं है जो संसार देता है (यूहन्ना 14:27), न ही यह बिना क्लेश के शान्ति है (यूहन्ना 16:33)।

यह पत्र मसीही लोगों को लिखा गया था जिन्हें यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ मिलाए जाने से शान्ति से शान्ति पहले ही मिल चुकी थी। इस शान्ति की चर्चा कुलुस्सियों 1:20-22 में की गई परन्तु यहां पर पौलुस की चिंता इस बात पर थी कि वह निरन्तर शान्ति की इच्छा कर रहा था जिससे परमेश्वर के साथ मेल होता है, यानी परेशान संसार के बीच में शांत और स्थिर मन।

मसीही लोगों के रूप में हमारे लिए ''विश्राम और चैन'' के साथ जीवन के लिए प्रार्थना करनी (1 तीमुथियुस 2:2) और अपनी चिंताओं को अपनी प्रार्थनाओं में परमेश्वर को दे देना आवश्यक है (1 पतरस 5:7)। परिणाम यह होगा कि ''परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित

रखेगी'' (फिलिप्पियों 4:6, 7)। परमेश्वर की शान्ति पाने के लिए हमारी सोच और काम परमेश्वर की उम्मीदों के साथ मेल खाते होने चाहिए (फिलिप्पियों 4:8, 9)। पौलुस की इच्छा थी कि कुलुस्सियों को अनुग्रह और शान्ति परमेश्वर की ओर से जो इसका एकमात्र सच्चा देने वाला है, मिले।

पौलुस ने अपने सलाम को समाप्त करने के लिए हमारे पिता परमेश्वर की ओर से जोड़ दिया। पौलुस के पत्रों के परिचय में आयत 2 ही एकमात्र स्थान है जिसमें ''और यीशु मसीह'' को जोड़े बिना पिता का उल्लेख हैं। ''परमेश्वर'' शब्द परमेश्वरत्व के लिए है। पिता की बात करने के अलावा यीशु के सम्बन्ध में ''परमेश्वर'' (यूहन्ना 1:1) और पवित्र आत्मा (प्रेरितों 5:3, 4) का भी इस्तेमाल होता है। नये नियम में भी बहुत से मामलों की तरह यहां पर यीशु और पवित्र आत्मा के बजाय पिता के लिए परमेश्वर इस्तेमाल हुआ है। मसीही लोग परमेश्वर को आरम्भ और सम्भाल के अर्थ में ''हमारा पिता'' कह सकते हैं। जिस प्रकार से बच्चा अपने अस्तित्व और देखभाल के लिए अपने सांसारिक पिता का देनदार होता हैं, वैसे ही अपने अस्तित्व और अपनी आवश्यकता की हर चीज उपलब्ध करवाने के लिए चाहे वह शारीरिक हो या आत्मिक, सब लोग परमेश्वर के देनदार हैं। एक विशेष अर्थ में मसीही लोग उसे अपना पिता कह सकते हैं। पौलुस ने कई बार ''हमारे पिता'' वाक्यांश का इस्तेमाल किया, जिसमें अधिकतर सलामों या अभिवादनों में है। यीशु ने चेलों को इसके बजाय कि परमेश्वर को ''हमारा पिता'' कहकर सम्बोधित करें। बार-बार मसीह ने परमेश्वर को ''तुम्हारा पिता'' कहा (जैसे मत्ती 5:16, 45)।

---

# पौलुस की अपार इच्छा

## ( थिस्स. 1:17-20 )

## अर्ल डी एडवर्डस

**हे भाइयो, जब हम थोड़ी देर के लिये, मन में नहीं वरन् प्रगट में, तुमसे अलग हो गए थे, तो हम ने बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा मुँह देखने के लिये और भी अधिक यत्न किया। इसलिये हमने (अर्थात् मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं वरन् दो बार तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु शैतान हमें रोके रहा। भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे? हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।**

आयत 17. एक बार फिर, पारिवारिक भावना को पौलुस के द्वारा उन्हें भाइयों कहे जाने पर व्यक्त किया गया। पौलुस ने कहा, वह थोड़ी देर के लिये उनसे अलग हो गया था (''बिछड़ गया था''; NIV), जो इस बात की ओर संकेत करता है कि पौलुस को जबरन उनसे अलग किया गया था (प्रेरितों 17:1-10)। अपोरफानिजो, का अनुवाद ''अलग हो गए'' किया गया है, जिसका प्रायौगिक अर्थ ''आपसे वंचित हो गए'' होता है। काईरोस होरा

जिसका प्रायौगिक अर्थ ''एक घंटे का समय'' है, परन्तु, इसका अनुवाद ''थोड़ी देर के लिये'' बिल्कुल सही किया गया है। सम्भवत: यह कुछ ही महीनों की बात थी।

पौलुस एक माता/पिता के समान दुखी हो गया जिसका बच्चा जबरन उससे छीन लिया जाता है, परन्तु मन में वह उनसे दूर नहीं था। अभिप्राय यह है, कि वह अपने भाइयों के साथ ही था। उसकी बड़ी लालसा थी कि वह उन्हें फिर से देखे, यद्यपि, वह उनसे बस ''थोड़ी देर के लिये'' ही अलग हुआ था। वह उनके पास आने से छिप रहा था, क्योंकि सम्भवत: यहूदी लगातार उसे ढूंढ रहे थे (प्रेरितों 17:13-15)। आयत 17, के साथ 3:10 पौलुस और उसके सहकर्मियों और थिस्सलुनीके के मसीहियों के बीच एक अत्यधिक मजबूत मसीही बंधन की ओर संकेत करता है।

आयत 18. पौलुस और उसके सहकर्मी थिस्सलुनीके में एक बार नहीं वरन् दो बार आना चाहते थे परन्तु, शैतान अनाज्ञाकारी यहूदियों का प्रयोग करते हुए उनके जीवन में भय उत्पन्न कर उन्हें वापस आने से रोके रहा। हम शैतान का दूसरों पर प्रभाव की तुलना प्रेरितों 5:3 और 2 कुरिन्थियों 2:11 से कर सकते हैं।

यूनानी भाषा में वह स्पष्ट कहता है कि शैतान उन्हें ''एक बार वरन् दो बार'' रोके रहा। यूनानी क्रिया शब्द (एनेकोप्सेन) का अनुवाद ''रोके रहा'' किया गया है जिसका प्रयोग मार्ग में बड़ी दरार, रास्ता पार करना और उसे कठिन बनाने, का वर्णन करने के लिये किया गया। इसीलिए पौलुस ने थिस्सलुनीके में उनके पहुँचने से रोकने के लिये शैतान पर आरोप लगाया। ''यह बाधा बीमारी, कुरिन्थिस में यहूदियों का विरोध'' या इसी के समान बातें हो सकती हैं।

आयतें 19, 20. शब्द भला (तो फिर) बताता है कि क्यों पौलुस थिस्सलुनीकियों से मिलने के लिये बड़ा उत्साहित हुआ चाहता था- क्योंकि वे उसकी आशा और आनन्द थे। वास्तव में, उसने सुनिश्चित किया कि हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय (अपनी महिमा के साथ द्वितीय आगमन; 4:15; 5:1-3), वे उसकी बड़ाई का मुकुट होंगे। ''बड़ाई'' यूनानी शब्द (कौचेसिस) से लिया गया है। डेविड जे विलियम्स ने लिखा था:

इस शब्द का अर्थ कभी-कभी ''घमण्ड करना'' (अन्य उदाहरण रोमियों 3:27; 2 कुरिन्थियों 11:10, 17) हो सकता है, परन्तु, इस सन्दर्भ में सबसे उत्तम अनुवाद ''बड़ाई'' किया गया है। पौलुस खेलकूद के रूपक को बनाए रखता है और स्वयं को एक खिलाड़ी के रूप में देखता है, अपनी जीत में सर्वश्रेष्ठ के सिंहासन के सामने महिमा पाने का घमण्ड कर रहा है।

पौलुस ने आगे कहा, **हमारी बड़ाई तुम ही हो।** ''बड़ाई/महिमा'' का यूनानी शब्द डोक्सा है, ''एक ऐसी प्रशंसा 'जिस पर मनुष्य गर्व करता है' जैसा कि 1 कुरिन्थियों 11:7 में, जहाँ पर 'एक स्त्री पुरूष की महिमा है।

पौलुस थिस्सलुनीकियों के कारण जिसने विश्वासपूर्ण जीवन जीया ''महिमा'' (द्वितीय आगमन पर) पाएगा। वह उनकी ओर इशारा करेगा कि वे उसके अपने जीवन का एक अच्छा फल बना। इसका तात्पर्य है, कि वे उसकी ''आशा'' थे। और अधिक गहरे अर्थ में, नि:संदेह, मसीह हमारी आशा है (1 तीमुथियुस 1:1); परन्तु, वे लोग जो हमारे द्वारा मसीह

में आ चुके हैं वे भी हमारी आशा हैं, जो गवाह का एक रूप बन चुके हैं कि हमने अपने गुणों का प्रयोग किया (मत्ती 25:14-28)। उसे यह जानकर बड़ा ''आनन्द'' हुआ कि उसने उन्हें अपने परमेश्वर में मेल-मिलाप कराने की एक भूमिका निभाई और बहुतायत का जीवन पाने में उनकी सहायता की (3 यूहन्ना 3, 4)।

भौतिक/सांसारिक वस्तुएं इस प्रकार का आनन्द नहीं दे सकती हैं, यह ज्ञान मसीह के लौटने पर जब हम उसके सामने खड़े होंगे तब दिया जाएगा। मसीहियों को सावधान रहना चाहिए कि इस आनन्द को पाने के लिये कोई भुल न हो जाए। अन्त में, पौलुस ने उन्हें अपना ''मुकुट'' कहा, जिस प्रकार अन्त के समय जब यह तय किया जाएगा। कि वे अन्त तक धीरज धरे रहे, वे उसकी सेवकाई के मुकुट होंगे (1 कुरिन्थियों 3:13-15; फिलिप्पियों 4:1; 2 तीमुथियुस 4:6-8 भी देखें)।

अध्याय 2 में, पौलुस ने स्वयं का बचाव एक विश्वासयोग्य प्रचारक होने के रूप में करना चाहा। थिस्सलुनीके में उसके बारे में कुछ आलोचना की जा रही थी, क्योंकि कुछ लोगों ने उसके बहुत जल्दी से चले जाने के कारण को गलत ढंग से प्रस्तुत किया था। वे यहूदी हो सकते थे, थिस्सलुनीकियों के विरूद्ध तनाव के मुख्य स्त्रोत थे, जो कहते थे पौलुस कपटी, डरपोक था और नई कलीसिया की सहायता के लिये वापस नहीं आएगा।

परन्तु, उसके इस प्रकार की आलोचना का सामना करने के विषय में दोनों पत्रियों में कोई विवरण नहीं मिलता। हो सकता कि आगे की अनुच्छेद में हो, पौलुस सचमुच में अपने कार्य का बचाव नहीं कर रहा था, परन्तु अपनी सेवकाई की सच्चाई और उस समय के झूठे प्रचारकों के छलपूर्ण प्रयास के बीच के अन्तर को स्पष्ट करने के लिये उसका वर्णन कर रहा था।

उसने थिस्सलुनीके की कलीसिया को जो कुछ उसने कहा था उसकी सुनिशिचित्ता के लिये प्रयोग किया। वे ही उसके गवाह ठहरेंगे। वे जानते थे कि उनके बीच उसका चाल चलन किस प्रकार का था।

चर्चा जिसमें वह सम्मिलित था वह सच्चे प्रचार की कला या आदत का एक सूझ-बूझ पूर्ण चित्रण था। प्रत्येक सुसमाचार प्रचारक को बार-बार और ध्यान से पवित्र शास्त्र के इस भाग का अध्ययन करना चाहिए।

---

# क्या यह काफ़ी है?

## सूज़ी फ्रैड्रिक

जब एक स्त्री यह समझ लेती है कि वह एक धार्मिक जीवन व्यतित कर रही है, तब यह स्वाभाविक है कि वह बाइबल की ओर देखती है कि परमेश्वर उससे क्या चाहता है? उसे बहुत सारी ऐसी स्त्रियों के उदाहरण मिलते हैं जो धार्मिक थीं जैसे कि सारा, जिसका परमेश्वर में बहुत बड़ा विश्वास था, तथा मारथा और मरियम जो कि मेहमान नवाज़ी यानि आदर सत्कार करने में पीछे नहीं रहती थीं तथा यीशु और उसके चेलों की उन्होंने बहुत सेवा की थी। दोरकास ने पूरे जीवन भर लोगों की सहायता की तथा प्रिसकिल्ला सुसमाचार फैलाने में पौलूस की सहायता

करती थी। बाइबल हमें यह भी सलाह देती है कि हमें अपने पतियों से प्रेम करना चाहिए तथा अपने बच्चों से प्रेम करना और उनकी अच्छी देखभाल करनी चाहिए। दूसरों को यीशु के विषय में बताना तथा सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए तथा इस सब में धीरज़ रखने की बहुत आवश्यकता है। संयम तथा उचित व्यवहार की भी बहुत आवश्यकता है। जो भी स्त्री ऐसा करेगी उसके परिवार में प्रसन्नता होगी। परन्तु क्या यह सब करने से वह अनन्त जीवन, जो कि स्वर्ग में मिलेगा, उसको भी प्राप्त करेगी?

बाइबल का नया नियम हमें बताता है कि कोई भी व्यक्ति अनन्त जीवन को कमा नहीं सकता। यदि कोई व्यक्ति एक हज़ार अच्छे या भले कार्य कर ले या तीर्थ यात्राएं कर लें तौ भी वह अपने पापों से मुक्ति नहीं पा सकता। (इसके लिये देखिये-तीतुस 3:5; इफिसियो 2:4-10)। परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह यीशु के द्वारा हमें पापों से मुक्ति दे सकता है, ''क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' (रोमियो 6:23)। जब हम विश्वास करके बपतिस्मे के द्वारा यीशु को अपने आप को सौंप देते हैं, तब हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं'' तथा हम परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं। (प्रेरितों 2:38; गलतियों 3:26-27)। हमारे बपतिस्मे के पश्चात जब हम निरन्तर परमेश्वर की आराधना करते तथा उस पर भरोसा रखकर उसकी सेवा करते हैं, तब उसका अनुग्रह हमारे पापों को लगातार क्षमा करता रहता है। (1यूहन्ना 1:7)।

मसीही बन जाने के पश्चात हमें उन बातों को करते रहना चाहिए जो धार्मिकता से जुड़ी हुई हैं ताकि हम परमेश्वर को प्रसन्न कर सकें। यदि हम पापों से उद्धार पाना चाहते हैं तथा अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं तब हमें यीशु में बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, ताकि हमारे पाप क्षमा हो सकें। (यूहन्ना 3:3-5; मरकुस 16:15-16, 2 थिस्सलुनीकीयों 1:8; प्रेरितों 2:38)। मेरा आपसे यह आग्रह है कि आप अपनी बाइबल को पढ़िये तथा खोजिये कि परमेश्वर की इच्छा आपके लिये क्या है? आज मनुष्य के लिये केवल एक ही आशा है और वो है प्रभु यीशु मसीह तथा उसका सुसमाचार (रोमियों 1:16)।

---

# आप परमेश्वर को कितनी अच्छी तरह से जानते हो

1. **पुलपिट पर से पढ़े जाने की दर से, पूरी बाइबल पढ़ने के लिए 70 घंटे और 40 मिनट का समय लगता है।**
2. **पुराने नियम को पढ़ने के लिए 52 घण्टे और 20 मिनट लगते हैं।**
3. **नये नियम को पढ़ने के लिए 18 घण्टे और 20 मिनट लगते हैं।**
4. **पुराने नियम की सबसे लम्बी पुस्तक, लूका को पढ़ने के लिए 2 घण्टे 43 मिनट लगते हैं।**
6. **क्या आपके पास परमेश्वर के लिखित वचन के साथ समय बिताने से बढ़कर कोई और तरीका है?**

---